Knowledgeable Research (KR) 2026, Vol., (5):03
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में नारी विमर्श

डॉ. बलवीर*
सहायक आचार्य
स्वामी शुकदेवानंद कालेज शाहजहाँपुर

Abstract

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में नारी विमर्श स्त्री के अस्तित्व, अस्मिता, स्वतंत्रता और सामाजिक स्थिति के बहुआयामी विश्लेषण का महत्वपूर्ण आधार बनकर उभरा है। यह शोध पत्र नारी की पारंपरिक छवि से आधुनिक स्वायत्त व्यक्तित्व तक की यात्रा को रेखांकित करता है। मुंशी प्रेमचंद के यथार्थवादी दृष्टिकोण से लेकर कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी और मृदुला गर्ग की वैचारिक प्रगतिशीलता तक, स्त्री-चेतना के विकास का गहन अध्ययन किया गया है।.

Keywords: *नारी विमर्श, स्त्री अस्मिता, पितृसत्ता, आधुनिक हिंदी उपन्यास, लैंगिक समानता, आत्मनिर्भरता |*

Received: 11/02/2026
Accepted: 24/03/2026
Published: 31/03/2026

***Corresponding Author:**
Dr. Balveer
Email: 81balveer@gmail.com

हिंदी साहित्य में नारी की स्थिति समय के साथ परिवर्तित होती रही है। प्रारंभिक साहित्य में स्त्री को त्याग, सहनशीलता और मर्यादा का प्रतीक माना गया, किंतु आधुनिक काल में यह दृष्टिकोण बदलने लगा। आधुनिक हिंदी उपन्यासों में नारी अपने अधिकारों के प्रति सजग और आत्मनिर्भर दिखाई देती है।

आधुनिक युग में हिन्दी के महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में स्त्री की सामाजिक स्थिति और संघर्ष को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया। गोदान की धनिया एक ऐसी स्त्री है जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपने परिवार और आत्मसम्मान की रक्षा करती है।"नारी केवल सहनशीलता की प्रतिमा नहीं, बल्कि संघर्ष की धुरी है।"[1] यह दृष्टिकोण आधुनिक नारी विमर्श की आधारशिला के रूप में देखा जा सकता है।

नारी विमर्श एक वैचारिक आंदोलन है, जो स्त्री के अधिकारों, स्वतंत्रता और समानता की स्थापना की मांग करता है। यह पितृसत्तात्मक व्यवस्था की आलोचना करता है और स्त्री को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में स्थापित करता है।

पश्चिमी नारीवादी आंदोलन का प्रभाव हिंदी साहित्य पर भी पड़ा। शिक्षा के प्रसार, औद्योगिकीकरण और सामाजिक सुधार आंदोलनों ने स्त्री-चेतना को जागृत किया। महादेवी वर्मा ने स्त्री की स्थिति पर विचार करते हुए कहा—"स्त्री न समाज की परिधि है, न ही केवल गृहस्थी का अंग, वह स्वयं एक स्वतंत्र सत्ता है।"[2] आधुनिक उपन्यासों में स्त्री की पारंपरिक छवि—त्यागमयता , सहनशीलता और आश्रितता —धीरे-धीरे बदलती है। अब वह अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाती है और सामाजिक बंधनों को चुनौती देती है। आधुनिक युग में शिक्षा ने स्त्री को आत्मनिर्भर और जागरूक बनाया। वह अब आर्थिक रूप से स्वतंत्र होकर अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने लगी है। उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में यह स्पष्ट दिखाई देता है—"स्त्री अब

केवल घर की सीमा में बंधी नहीं, वह अपनी पहचान स्वयं गढ़ रही है।"[3]

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में स्त्री की यौनिकता को भी अभिव्यक्ति मिली है, जो पहले वर्जित विषय माना जाता था। कृष्णा सोबती का मित्रो मरजानी उपन्यास इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है—"मित्रो अपनी इच्छाओं को दबाने वाली नहीं, उन्हें जीने वाली स्त्री है।"[4] यह उद्घोष स्त्री के आत्म-अधिकार और स्वतंत्रता का प्रतीक है। आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में विवाह संस्था को भी नए दृष्टिकोण से देखा गया है। मन्नू भंडारी के आपका बंटी में टूटते परिवार और स्त्री की मनःस्थिति का गहन चित्रण मिलता है—"परिवार अब केवल सामाजिक बंधन नहीं, बल्कि व्यक्तिगत समझ का विषय है।"[5]आधुनिक उपन्यासों में स्त्री केवल पीड़िता नहीं, बल्कि संघर्षशील और प्रतिरोधी भी है। वह सामाजिक अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाती है।

मृदुला गर्ग के उपन्यासों में स्त्री सामाजिक बंधनों को तोड़ती हुई दिखाई देती है। महादेवी वर्मा ने स्त्री की संवेदनशीलता, पीड़ा और आत्मसंघर्ष को गहराई से चित्रित किया। उन्होंने स्त्री की स्वतंत्रता और यौनिकता को साहसिक रूप से प्रस्तुत किया। मन्नू भंडारी ने मध्यवर्गीय स्त्री के संघर्ष और मानसिक द्वंद्व को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया। इनके उपन्यासों में अकेली और आत्मनिर्भर स्त्री की मनोवैज्ञानिक स्थिति का चित्रण मिलता है। उन्होंने स्त्री को सामाजिक बंधनों से मुक्त एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया।

नारी विमर्श समाज में स्त्री की स्थिति को सुधारने का प्रयास करता है। यह लैंगिक समानता और न्याय की मांग करता है। आर्थिक स्वतंत्रता स्त्री के सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण आधार है। आधुनिक उपन्यासों में स्त्री को कार्यक्षेत्र में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए दिखाया गया है। स्त्री के मानसिक संघर्ष, अकेलापन और आत्म-संघर्ष को भी आधुनिक उपन्यासों में प्रमुखता से चित्रित किया गया है। नारी विमर्श सांस्कृतिक परंपराओं और रूढ़ियों को चुनौती देता है।

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में नारी विमर्श केवल स्त्री के अनुभवों का चित्रण नहीं करता, बल्कि यह समाज की संरचना की आलोचना भी करता है। यह विमर्श पितृसत्तात्मक व्यवस्था, लैंगिक असमानता और सामाजिक रूढ़ियों को उजागर करता है। साथ ही यह स्त्री को एक सक्रिय परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में स्थापित करता है। आज के समय में नारी विमर्श और अधिक प्रासंगिक हो गया है। शिक्षा, रोजगार और सामाजिक जागरूकता के कारण स्त्री की स्थिति में सुधार हुआ है, लेकिन अभी भी कई चुनौतियाँ मौजूद हैं।

आधुनिक हिंदी उपन्यास इन चुनौतियों को उजागर करते हुए समाज को दिशा प्रदान कर रहे हैं। आधुनिक हिंदी उपन्यासों ने नारी विमर्श के माध्यम से स्त्री को एक नई पहचान प्रदान की है। यह विमर्श न केवल साहित्यिक, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी माध्यम बना। आज की नारी आत्मनिर्भर, जागरूक और संघर्षशील है। वह समाज में समानता और न्याय की स्थापना के लिए निरंतर प्रयासरत है

संदर्भ -

1- भंडारी, मनु. आपका बन्टी. राजकमल प्रकाशन, 1971, पृष्ठ . 102.

2- प्रेमचंद, मुंशी. गोदान. सरस्वती प्रकाशन, 1936, पृष्ठ. 56.

3- प्रियंवदा,ऊषा.रुकोगी नहीं राधिका. भारतीय जनपथ प्रकाश न, 1967, पृष्ठ. 134.

4- सोवती , कृष्णा. मित्रो मरजानी. राजकमल प्रकाशन, 1966, पृष्ठ. 78.

5- वर्मा, महादेवी. श्रृंखला की कड़ियां, 1942, पृष्ठ. 45.

6- गर्ग, मृदुला. चितकोबरा. राजकमल प्रकाशन, 1979, पृष्ठ. 102.